4

उन्होंने ''अपने भण्डार खोल दिए''

अब्राहम पशुधन में अमीर था। वह आनन्द से अपने बेहतरीन पशुओं में से परमेश्वर को चढ़ा सकता था और चढ़ाता भी था, परन्तु परमेश्वर ने उससे उसके सबसे बढ़िया पशु नहीं मांगे थे। उसने केवल एक चीज़ मांगी थी, जो अब्राहम को सबसे प्रिय थी, यानी एक पुत्र जिसके लिए वह खुशी से अपना प्राण भी दे देता। अब्राहम के घर में नौकर थे। परमेश्वर ने उनमें से किसी एक को क्यों नहीं मांगा। परमेश्वर ने इसहाक को ही मांगा जिसके द्वारा बहुत देर से की गई उसकी प्रतिज्ञा को पूरा किया जाना था। वह पुत्र जिसके द्वारा परमेश्वर ने अब्राहम को एक बड़ी जाति बनाने का वायदा किया था, अब्राहम उसी पर यानी इसहाक पर निर्भर था। यदि उत्पत्ति 22:3 इस प्रकार लिखा गया होता, ''नहीं, प्रभु, इसहाक नहीं! इसहाक के अलावा कुछ भी मांग ले! हे प्रभु, मेहरबानी करके इहासक को रहने दे।'' कितना बड़ा बलिदान है! क्या आज आराधना में ऐसा ही बलिदान आवश्यक है?

यीशु को दण्डवत करने के लिए पंडितों ने मुंह के बल गिरकर ''अपना-अपना भण्डार खोला, उन्होंने उसे सोना, और लोबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई'' (मत्ती 2:11; NKJV)। हां, आराधना के लिए मूल्यवान भेंट यानी बलिदानपूर्वक दी गई भेंट आवश्यक है। सोना युगों से बहुमूल्य उपहार के रूप में माना जाता है। राजाओं के मुकुट सोने के बने होते थे। महलों और मन्दिरों को इस कीमती धातु से सजाया जाता है। सोना शाही लोगों की पहचान है, जो राजा को दिए जाने के योग्य उपहार है।

लोबान कैसा उपहार है? पवित्र स्थान को परमपवित्र स्थान से अलग करने वाले पर्दे के सामने तम्बू में पवित्र स्थान में धूप की एक वेदी थी। मूसा को उस वेदी पर जलाई जाने वाली धूप बनाने की विशेष सामग्री बताई गई थी। लोबान जलाई जाने वाली सुगन्धि यानी परमेश्वर की आराधना के लिए मन भावनी सुगन्ध की सामग्री में शामिल थी। यह धूप पवित्र थी, जिसे केवल उसी वेदी पर इस्तेमाल किया जाना था और वह भी केवल परमेश्वर की आराधना के लिए (निर्गमन 30:34-38)।

लोबान एक सदाबहार पौधे के बीच से बनाया जाता है और पूर्व में आज भी कई धार्मिक कर्मकांडों में इसका इस्तेमाल होता है।[1] इसमें से मीठी महक केवल आग से जलाए जाने पर ही निकलती है। एल्फ्रेड पी. गिबस ने सुझाव दिया कि यह यीशु के पाप रहित जीवन की महक को दर्शाता है।[2] यह भेंट परमेश्वर को बलिदान किए जाने वाले जीवन को भी दर्शा सकता है, जो केवल आग से इसे परखे जाने पर ही मीठी महक देता है (देखें 1 पतरस 1:7) तौ भी परमेश्वर

का वफादार आराधक रहता है। ''हमारे पूरे प्राण (धूप की वेदी) के अन्तिम अग्निमय बलिदान से हमारी *आराधना* की मीठी महक निकलती है।''[3]

गुलमेहन्दी के पेड़ की प्रजातियों की राल से निकला मसाला अर्थात गन्धरस[4] भी तम्बू में की जाने वाली आराधना से जुड़ा है। मिलाप के तम्बू और अभिषेक किए जाने वाले सभी फर्नीचर और बर्तनों के लिए पवित्र अभिषेक के तेल को बनाने वाली चीज़ों में से यह एक था। हारून और उसके पुत्रों अर्थात याजकों को इसी तेल से अभिषेक किया गया था (निर्गमन 30:22-32)। गन्धरस परमेश्वर की दृष्टि में पवित्र था और इसका इस्तेमाल किसी और उद्देश्य के लिए नहीं किया जाता था।

क्रूस पर टंगे होने के समय यीशु को उसकी पीड़ा से राहत दिलाने के लिए सिरका मिला मुर्र पेश किया गया था (मरकुस 15:23)। निकुदेमुस यीशु की देह को दफ़नाने को तैयार करने के लिए मिला हुआ गन्धरस और एलेवा लाया था (यूहन्ना 19:39, 40)। कष्ट और मृत्यु के साथ इसके जुड़ाव के कारण कइयों का मानना है कि मुर्र की भेंट मनुष्य के छुटकारे के माध्यम के रूप में यीशु के कष्ट और मृत्यु की सांकेतिक भविष्यवाणी थी।[5] इन भेंटों का इनके देने वालों के लिए ऐसा विशेष या सांकेतिक भविष्यवाणी का अर्थ था या नहीं इस पर संदेह है; परन्तु बिना किसी शक के वे आराधकों की ओर से एक बलिदान को दर्शाते थे। उन्हें उनके ''भण्डारों'' में से दिया गया था (मत्ती 2:11)।

लोबान और मुर्र याजकों द्वारा दिए जाने वाली भेंटें थीं। याजक लोग, लोगों की ओर से जिनके जीवन परमेश्वर को सदा मीठी महक नहीं देते थे, परमेश्वर के पास जाने के लिए इन चीज़ों का इस्तेमाल करते थे। लोबान और मुर्र पाप, मृत्यु और भ्रष्टाचार की बदबू को ढांप लेते थे। प्रकाशितवाक्य में धूप के धुएं को पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं से मिलाया गया है, जो मीठी महक के रूप में परमेश्वर के सामने जाती है (प्रकाशितवाक्य 5:8; 8:3, 4)। दाऊद ने यही सम्बन्ध बनाया था जब उसने कहा, ''मेरी प्रार्थना तेरे सामने सुगन्धित धूप, और मेरा हाथ फैलाना, संध्याकाल का अन्नबलि ठहरे'' (भजन संहिता 141:2)।

महंगी भेंट

बलिदान वह होना आवश्यक है, जिसे हम अपने पास रखना चाहते हों यानी कोई कीमती चीज़। वरना यह बलिदान नहीं कहलाएगा। दाऊद के जीवन की दो घटनाएं इस सच्चाई का वर्णन करती हैं। एक घटना तब की है जब पलिश्तियों ने रपाईम में, जो यरूशलेम से बैतलहम तक फैला हुआ था, छावनी बनाई थी। बैतलहम में पलिश्तियों की सेना की टुकड़ियां थीं। दाऊद अदुल्लाम नामक गुफा में था। दाऊद को बैतलहम के कुएं के शीतल और शुद्ध जल की प्यास लगी थी, जो फाटक के पास ही था। उसके तीन जांबाजों ने जो दाऊद की इच्छा पूरी करना चाहते थे, अपनी जान हथेली पर लेकर पलिश्तियों की छावनी पर हमला करके कुएं से पानी लाकर दाऊद को दिया (2 शमुएल 23:13-17)। दाऊद को पानी पीना चाहता था, पर उसने पिया नहीं। इसके बजाय उसने यहोवा के सामने उसे उण्डेल दिया। वह अपने लिए जो पानी नहीं ला सका वह उसके आदमियों ने अपनी जान पर खेलकर लाया। ऐसी भेंट लेने के योग्य केवल परमेश्वर ही है, जो जान का जोखिम लेकर दी गई हो। दाऊद ने कहा, ''मुझसे ऐसा काम दूर रहे। क्या मैं उन मनुष्यों का

लहू पीऊं जो अपने प्राणों पर खेलकर गए थे?''

दूसरा उदाहरण 2 शमुएल 24 में मिलता है। वहां हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने इस्राएल पर मरी भेजी, क्योंकि लोगों की गिनती करके दाऊद ने उसे नाराज़ किया था (आयत 15)। पूरे देश में सत्तर हज़ार लोग मारे गए। दाऊद ने परमेश्वर से कहा, ''देख, पाप तो मैं ही ने किया और कुटिलता मैं ही ने की है; परन्तु इन भेड़ों ने क्या किया है? इसलिए तेरा हाथ मेरे और मेरे पिता के घराने के विरुद्ध हो'' (आयत 17)। गाद नबी ने दाऊद के पास आकर उससे अरौना के खलिहान में जाकर परमेश्वर को बलिदान चढ़ाने के लिए कहा। दाऊद ने बलिदान भेंट करने के लिए अरौना से खलिहान मोल लेना चाहा। अरौना ने दाऊद को बताया कि उसे जिस भी चीज़ की आवश्यकता है, चाहे वह होम बलि के लिए बैल हों या बलिदान को जलाने की लकड़ियों के लिए जुआ और सामान वह उसे दे देगा। दाऊद ने उत्तर दिया, ''ऐसा नहीं, मैं ये वस्तुएं तुझसे अवश्य दाम देकर लूंगा, मैं अपने परमेश्वर यहोवा को सेंत-मेंत के होम बलि नहीं चढ़ाने का'' (आयत 24)।

पशुओं को पालने वाले व्यक्ति को अपने झुण्ड के लिए सबसे बढ़िया पशु रखने का लालच रहता ही है। बलिदान के मूसा के प्रबन्ध में मालिक हर साल अपने पास जो पशु रखना चाहता था वह परमेश्वर के सामने बलिदान करने वाला पशु होता था (गिनती 18:29)। बलिदान में कीमती भेंट होती है। आराधना में परमेश्वर को कीमती भेंटें दी जाती हैं। परमेश्वर को अपनी बेहतरीन चीज़ें देना अपनी सम्पत्ति के बजाय, जिसे हम अपने पास रख सकते हैं, उसमें भरोसा करना है।

याजकों द्वारा दी जाने वाली भेंट

मसीही युग से पहले याजकों द्वारा बलिदान भेंट किए जाते थे। परमेश्वर के पास बलिदान लेकर केवल याजक ही जा सकते थे। इसमें मसीही आराधना के सबसे अर्थ भरपूर अवधारणाओं में से एक मिलती है। क्रूस पर यीशु की मृत्यु ने पवित्र स्थान (कलीसिया) और परम पवित्र स्थान (परमेश्वर का सिंहासन) के बीच का परदा खोल दिया। यीशु की मृत्यु के समय, मन्दिर का परदा ऊपर से लेकर नीचे तक दो फाड़ हो गया (मत्ती 27:50, 51), जिससे दोनों के बीच की रुकावट खत्म हो गई। इससे उसके चेलों के लिए वैसे ही परमेश्वर तक पहुंचने का मार्ग खुल गया जैसे पहले याजक उस तक पहुंच सकते थे। हमारा महायाजक यीशु ने ''अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया'' (9:12)। उसे केवल ''पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए'' (इब्रानियों 10:12) चढ़ाने की आवश्यकता थी। उसने अर्थात हमारे महायाजक ने पाप के लिए हमारे बलिदान के रूप में अपने आप को भेंट कर दिया है, इसलिए अब हम उसी दिलेरी के साथ अनुग्रह के सिंहासन तक जा सकते हैं, जिससे पहले केवल याजक ही जा सकते थे (इब्रानियों 4:16; 10:21, 22)।

क्या आप समझते हैं कि इसका अर्थ क्या है? मसीह के लहू के द्वारा छुड़ाए हुए लोग याजक हैं। अब हम वहां खड़े हो सकते हैं, जहां खड़े होने की अनुमति पहले केवल याजकों को थी। परमेश्वर के सच्चे आराधक ''एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा [हैं], इसलिए कि जिसने [हमें] अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करें'' (1 पतरस 2:9)। उसकी श्रेष्ठता का प्रचार करना उसकी महिमा करना ही है!

इब्रानियों की पुस्तक की मुख्य बातों में से एक यह है कि मसीही में परमेश्वर ने याजकाई को बदल दिया। पुराने नियम के याजकों का प्रबन्ध लेवी के गोत्र में से था, जबकि यीशु यहूदा के गोत्र से था (इब्रानियों 7:11-19)। न केवल महायाजक नया था बल्कि याजकाई का पूरा प्रबन्ध ही बदल दिया गया था, जो आज पूरी कलीसिया में मिलता है। मसीही लोगों को याजकों के रूप में परमेश्वर की आराधना के द्वारा उसे बलिदान भेंट करने का काम दिया गया है।

अपने प्रकाशन की पुस्तक के आरम्भ में यूहन्ना ने पुष्टि की कि यीशु मसीह ने ''हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया। ...'' (प्रकाशितवाक्य 1:6)। फिर उसने आराधना से भरी बात कही, ''उसकी महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन'' (1:6)। बाद में 5:10 में उसने सिंहासन के गिर्द स्वर्गीय प्राणियों को इस कोरस वाला एक नया गीत गाते दिखाया: ''उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।'' मेमने के लूह से परमेश्वर के लिए खरीदे गए लोग ''हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से'' (5:9) लिए गए हैं, परमेश्वर पर केन्द्रित याजकों का पूरा राज्य बनते हैं, जो वह है, जो उसने किया है, और जो वह हमारे लिए करता है। इसे जानना और मानना हमें सर्वशक्तिमान की प्रशंसा और महिमा करने के लिए घुटनों पर ले आता है। याजकों के रूप में ''हम इस मामले में अब दर्शक ही नहीं बन सकते यानी हमें भागीदार बनना आवश्यक है।''[6]

प्रकाशितवाक्य के इस भाग की चर्चा के बाद जैक हेयफर्ड ने 1 पतरस 2:9 पर टिप्पणी की: ''इस वचन में 'राज्य' और 'राज पदधारी' शब्द स्पष्ट रूप से आराधना की याजकाई सेवा के *शाही* पहलू का संकेत हैं। इसलिए मसीह में हमारे जीवन के केन्द्र में यह पहचानने की पुकार है कि उस *में* हमारा शासन प्रत्यक्ष रूप से हमारे द्वारा उस *की* आराधना से जुड़ा है।''[7] इन आयतों में कई वाक्यांश सीधे तौर पर निर्गमन 19:5, 6 से लिए गए हैं। जब मूसा सीनै पहाड़ पर गया तो परमेश्वर ने उसे लोगों को यह बताने के लिए कहा कि वे उसका *निज धन* होंगे, यानी वे उसके लिए *याजकों का राज्य* और *पवित्र जाति* होंगे। जो कुछ आरम्भ में परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए चाहा था वहीं आज कलीसिया यानी परमेश्वर के सच्चे आराधकों के लिए उपलब्ध है।

जीवित भेंट

परमेश्वर को बलिदान देने की बात सोचने पर अधिकतर आराधकों के ध्यान में आर्थिक योगदान ही आता है। मैं बलिदान के इस ढंग के महत्व को कम नहीं करना चाहता, यदि सचमुच यह बलिदानपूर्वक दिया गया है। कुछ बातों में अपने आर्थिक संसाधनों में से देना हमारी बलिदानपूर्वक आराधना का भाग होना आवश्यक है। परन्तु वचन के अध्ययन से स्पष्ट है कि जो परमेश्वर चाहता है कि हम उसे दें यह हमारी वह सम्पत्ति नहीं है। उसे न तो हमारी भौतिक वस्तुओं की चाह है और न ही आवश्यकता। सम्पत्तियां देने के लिए सबसे आसान ''सामान'' है। पतरस और अन्द्रियास पहली बुलाहट पर ही अपने जाल छोड़कर यीशु के पीछे हो लिए थे (मत्ती 4:18-20), परन्तु उन्हें बहुत देर तक यह समझ नहीं आया था कि यीशु वास्तव में उन्हें अपने जीवन देने के लिए बुला रहा था।

परमेश्वर को ठुकराने की मनुष्य की सबसे बड़ी वजह अपने लिए अपने आपको रखने की उसकी इच्छा है! मेरा मानना है कि पहले पाप का कारण यही था। परमेश्वर ने आदम को उस

पृथ्वी पर जिसने उसने बनाया था पूराअधिकार दिया (उत्पत्ति 1:26)। पृथ्वी पर मनुष्य का अधिकार उसके मन में परमेश्वर के अधिकार को मानने पर निर्भर था। जब आदम ने अपने जीवन में परमेश्वर के अधिकार को छोड़ देना चुना तो उसने पृथ्वी पर भी अपने अधिकार को छोड़ दिया। मसीह में, राज्य के लोग फिर से अपने आप को मसीह के अधिकार के अधीन करके उस अधिकार को पा सकते हैं। ''धन्य हैं वे, जो नम्र ['' दीन'' ; NKJV-प्रभु के नियन्त्रण के अधीन लाए गए लोग] हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे'' (5:5)।

ओसवल्ड चैम्बर्स को यह कहने का श्रेय दिया जाता है कि ''परमेश्वर हमें कहीं भी वस्तुओं को छोड़ने के लिए नहीं कहता, वह हमें केवल उनके लिए जिन्हें पाना लाभदायक है, छोड़ने के लिए कहता है, जिसमें जीवन भी है।''[8] इस बलिदान की बेहतरीन व्याख्या शायद रोमियों 12:1 में की गई है। अध्याय 11 परमेश्वर की बुद्धि और ज्ञान के भण्डारों के धन की स्तुति के साथ समाप्त होता है: ''उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।'' अध्याय 12 का आरम्भ ''इसलिए'' शब्द से होता है, जिसका अर्थ है कि उसी विचार को आगे बढ़ाया गया है यानी यह ध्यान में रखते हुए कि परमेश्वर की बुद्धि और ज्ञान अथाह हैं, हमसे ''अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके'' चढ़ाने के लिए कहा गया है और बताया गया है कि ''यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।'' परमेश्वर बेजान बलिदान नहीं चाहता जो एक बार दिए जाने पर दोबारा नहीं दिया जा सकता। वह हमें चाहता है यानी वह हमारे जीवनों को चाहता है! वह याजकीय आराधकों का पूरा साम्राज्य चाहता है। हमारे आत्म बलिदान का उद्देश्य परमेश्वर के अहं को चोट मारना या उसे शेखी मारने वाले अधिकार देना नहीं है। वह चाहता है कि हम अपने आप को दें क्योंकि अपने जीवनों पर दावा करने का हमारे लिए एक मात्र ढंग इन्हें उसे देना है (मत्ती 16:25)।

इस नियम को स्वर्गीय सेना की आराधना के ढंग में दिखाया गया है। प्रकाशितवाक्य 4:10 में हम पढ़ते हैं कि उन्होंने उसके सामने जो सिंहासन पर बैठा है, अधिकार के सब प्रतीकों और सत्ता का बलिदान करते हुए परमेश्वर के सिंहासन के आगे अपने-अपने मुकुट डाल दिए। उन्होंने अधिकार और शासन की अपनी पदवियों को बलिदान कर दिया।

पौलुस ने इस सच्चाई को अपने द्वारा लिखित कुछ अन्तिम शब्दों में समझाया है यह जानते हुए कि वह शीघ्र ही प्रभु के साथ होने को जाने वाला है, उसने तीमुथियुस को लिखा, ''अब मैं अर्घ्य की नाईं उंडेला जाता हूं, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है'' (2 तीमुथियुस 4:6)। उसने वह बलिदान किया जो उसके लिए उसके प्रभु ने किया था यानी अपना जीवन।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने भी ''स्तुतिरूपी बलिदान अर्थात उन होंठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा'' चढ़ाने की बात कही (13:15)। उसने आगे लिखा ''पर भलाई करना, और उदारता न भूलो; क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है'' (13:16)। इस आयत के पहले भाग में होशे नबी द्वारा कही गई बात की गूंज सुनाई देती है: ''बातें सीखकर और यहोवा की ओर फिरकर, उस से कह, सब अधर्म दूर कर; अनुग्रह से हम को ग्रहण कर; तब हम धन्यवाद रूपी बलि चढ़ाएंगे'' (होशे 14:2)। किंग जेम्स वर्जन में कहा गया है, ''So will we render the calves of our lips.'' बॉब मुम्फोर्ड ने इस वाक्य रचना पर टिप्पणी की है:

मूसा के अधीन ठहराए गए मूल बलिदान में बछड़ों, बैलों, मेमनों और जंगली पण्डुकों के लिए कहा गया था। परन्तु इन्हें बलिदान तो किया जा सकता था, जबकि व्यक्ति का हृदय इनमें नहीं होता था। परमेश्वर ने लोगों को बार-बार बताया कि वह ऐसे लोगों की तलाश में है, जो यह कहते हुए उसके सामने खड़े होंगे, ''हे परमेश्वर, मैं तुझे स्तुति का बलिदान चढ़ता हूं। ... मेरे होंठों के बछड़े भी। हे प्रभु मैं तेरी आराधना करता हूं।''[9]

परमेश्वर की *भावता* बलिदान में दूसरों के साथ दया करने और परमेश्वर के साथ अपने याजकीय सम्बन्ध के आनन्द को बांटना शामिल है। जीवित बलिदान हृदय के बलिदान हैं। पण्डितों ने यीशु को अपने खजाने पेश किए थे। यीशु ने कहा, ''क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा'' (मत्ती 6:21)। परमेश्वर चाहता है कि दिल का खजाना उसकी इच्छा और उद्देश्य के लिए बलिदान किया जाए। वरना जो चीज़ें हम अपने दिलों में जमा करते हैं, वे परमेश्वर और हमारे बीच में आ सकती हैं। दाऊद ने परमेश्वर को अपने दिल का जानने वाले के रूप में पहचाना। उसने कहा, ''टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता'' (भजन संहिता 51:17)। दिल के खजाने परमेश्वर को चढ़ाने (बलिदान करने) की प्रक्रिया ही आराधना है। यह सांसारिक खजानों में आपके भरोसे को तोड़कर आपको उसमें भरोसा रखने के सदा तक रहने वाली शान्ति और पूर्णता के आनन्द से भर देता है।

सारांश

हर मसीही की सबसे बड़ी बुलाहट परमेश्वर का याजकीय आराधक होना है (1 पतरस 2:5)। बलिदान विहीन आराधना वास्तव में आराधना है ही नहीं। बलिदानपूर्वक आराधना की कम से कम तीन बातें याद रखनी आवश्यक हैं।

1. *बलिदान का सबसे बड़ा उद्देश्य प्रेम है।* सुलैमान के सामने दो वेश्याएं आई थीं, जो एक ही घर में रहती थीं। दोनों के पास एक-एक बच्चा था; परन्तु एक का बच्चा रात को उनके सोते समय मर गया था। उसने अपने मरे हुए बच्चे को उठाकर दूसरी स्त्री के पास रख दिया और उसका जीवित बच्चा उठा लिया था। दोनों ही दावा कर रही थीं कि जीवित बच्चा उसका है। सुलैमान ने मुकदमे को सुना और इसे निपटाने का बेहतरीन ढंग सुझाया। उसने सुझाव दिया कि जीवित बच्चे को बीच में से काटकर दोनों स्त्रियों को आधा-आधा दे दिया जाए। उनमें से एक स्त्री चिल्ला उठी, ''हे मेरे प्रभु! जीवित बालक उसी को दे, परन्तु उसको किसी भांति न मार।'' दूसरी स्त्री ने कहा, ''वह न तो मेरा हो न तेरा, वह दो टुकड़े किया जाए!'' सुलैमान को पता चल गया कि असली मां कौन है। केवल प्रेम के कारण ही अपने बेटे को जीवित रहने के लिए वह उसे छोड़ देने के लिए प्रेरित हुई (1 राजाओं 3:16-28)। परमेश्वर के लिए सच्चा प्रेम ही हमें उसके लिए अपने खजाने को छोड़ देने के लिए प्रेरित कर सकता है।

2. *बलिदान की सबसे बड़ी भलाई कृतज्ञता* है। ''इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलाने का नहीं, उस अनुग्रह को हाथ से न जाने दें, जिसके द्वारा हम भक्ति, और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना कर सकते हैं, जिससे वह प्रसन्न होता है'' (इब्रानियों 12:28)। जब हम पूरी तरह से जान जाते हैं कि परमेश्वर कौन है, उसने हमारे लिए क्या किया है और वह हमारे

लिए क्या कर रहा है तो हम सचमुच में कृतज्ञ हो सकते हैं। उद्धारकर्त्ता की अपनी आवश्यकता को समझने और छुटकारे के उसके उपहार को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करने वालों के पास ही आराधना करने का कारण है।

3. *अन्तिम बलिदान ''अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके'' चढ़ाना है* (रोमियों 12:1)। महायाजक अर्थात हमारे प्रभु और राजा ने हमारे लिए बलिदान के रूप में अपने आप को चढ़ा दिया। हमारी आराधना वेदी पर उसके लिए *अपने आप* को देने से कम की पुकार नहीं करती। ''यीशु की तरह जब हम पवित्र आत्मा की आग से पूरी तरह भस्म होने देने के लिए अपनी आत्मा को पिता के हाथों में दे देते हैं तभी और केवल तभी उसकी उपस्थिति में जाने को तैयार होते हैं।''[10]

टिप्पणियां

[1]डब्ल्यू. एल. वाकर, ''फ्रैंकिनसेंस,'' इन *द इंटरनेशल स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया,* संस्क. जेम्स ऑर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1957), 2:1144. [2]एल्फ्रेड पी. गिबस, *वरशिप: द क्रिश्चियन'स हाइट्स ऑक्यूपेशन,* द्वितीय संस्क. (कैनसस सिटी, कैनसस: वाल्टरिक पब्लिशर्स, तिथि नहीं), 45. [3]जेम्स पी. गिल्स, *ए हार्ट एफ्लेम: द डायनामिक्स ऑफ़ वरशिप* (ट्रपन स्प्रिंग्स, फ्ले: एन.पी., तिथि नहीं), 75. [4]ई. डब्ल्यू. जी. मास्टरमैन, ''मर्रे,'' इन *द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया,* संस्क. जेम्स ऑर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं.,1957), 3:2102-3. [5]गिबस, 45. [6]बॉब मुम्फोर्ड, *एन्टरिंग एण्ड एन्जॉइंग वरशिप* (एफ. लॉडरडेल, एफ: बॉय ऑथर, 1975), 47. [7]जैक हेयफर्ड, *वरशिप हिज़ मजैस्टी* (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1987), 89. [8]*इलम स्प्रिंग्स बाइबल कॉलेज 1996-1997 कैटलॉग* (इलम स्प्रिंग्स, आरकैंसा: इलम स्प्रिंग्स बाइबल कॉलेज, 1996), 18. [9]ममफोर्ड, 49. [10]गिल्स, 75.